BA III    **पानीपत की तीसरी लड़ाई**

~~मराठा युद्ध के संबंध~~ **पानीपत के युद्ध के संबंध में इतिहासकारों के मत -**

मराठा इतिहासकारों का विश्वास है कि मराठों ने 28 हजार सैनिकों के अतिरिक्त राजनीतिक महत्त्व का कुछ भी नहीं खोया। अब्दाली को भी विशेष लाभ नहीं हुआ। जी. एस. सरदेसाई लिखते हैं कि युद्ध स्थल में मराठों के सैन्य बल को बहुत अधिक क्षति हुई। इसके अतिरिक्त इस युद्ध ने कुछ भी निर्णय नहीं किया। नाना फड़नवीस तथा महादजी सिंधिया जो भाग्य से इस घातक दिन मृत्यु के हाथों बच गए थे, मराठों की शक्ति को पुनर्जीवित कर दिया। पानीपत के युद्ध के पश्चात मराठा शक्ति पहले की भाँति उभरने लगी तथा आने वाले 40 वर्षों में वह पुनः एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बन गई।

दूसरी ओर यदुनाथ सरकार का मत है कि मराठा इतिहासकारों की एक परंपरा बन गई है कि पानीपत युद्ध के परिणामों को छिपाया जाए। महाराष्ट्र में संभवतः ही कोई ऐसा परिवार होगा जिसने कोई न कोई संबंधी न खोया तथा कुछ परिवारों का सर्वनाश ही हो गया था। पेशवा इस महान शोक के कारण चल बसे साथ ही साथ सभी प्रमुख मराठा नेता समाप्त हो गए। रघुनाथ राव जो मराठा इतिहास का सबसे निकृष्ट व्यक्ति था, की स्वार्थलिप्सा के लिए द्वार खुल गए।

**मराठों की विफलता के कारण -**

(1.) उत्तर भारत की सभी शक्तियों का मराठों से विक्षुब्ध होना।

(2.) **मराठा सरदारों की परस्पर वैमनस्यता** - भाऊ ने मल्हार राव होल्कर को व्यर्थ वृद्ध पुरुष कहकर उसे अपमानित किया था।

(3.) **मराठों की तुलना में अब्दाली की अत्यधिक सैन्य क्षमता एवं उत्तम युद्ध रणनीति** - अब्दाली ने बंदूकों

का प्रयोग किया जबकि मराठे अभी भी तलवारों तथा भालों से लड़े। इब्राहीम खां गर्दी का भारी तोपखाना इस युद्ध में मराठों के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ उधर अब्दाली की ऊंटों पर रखी घूमने वाली तोपों ने मराठों का सर्वनाश कर दिया।

वास्तव में अब्दाली की उत्तम युद्ध नीति तथा दांव पेंच ने मराठा जीत के अवसर समाप्त कर दिए थे।

(4.) मराठा छावनी में अकाल की स्थिति — दिल्ली से रसद वाला मार्ग कट जाने से सैनिकों के लिए रोटी और घोड़ों के लिए चारा नहीं था।

(5.) मराठों की कूटनीतिक योग्यता का अभाव - मराठों ने अवध और रुहेला राज्य के बीच विद्यमान मतभेद का लाभ नहीं उठाया और फिर ये दोनों राज्य मराठों के विरुद्ध ही खड़े हो गए।

(6.) भाऊ की योजनागत असफलता - (i) सूरजमल की मराठों की परंपरागत युद्ध प्रणाली को अपनाकर शत्रु पर वार करने की सलाह को ठुकराना
(ii) सेना के सभी दस्तों में सामंजस्य का अभाव
(iii) रिजर्व सेना की व्यवस्था किए बिना ही सारी सेनाओं को युद्ध की भट्ठी में झोंक देना।

पानीपत के युद्ध का महत्त्व

पानीपत के युद्ध ने निश्चय ही भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में मराठा प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाई। यह सत्य है कि इन्होंने 1772 में और 1789 में मुगल सम्राट को पुनः संरक्षण दिया परंतु उन्होंने पंजाब तथा मुल्तान को पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया तथा न ही सीमारक्षकों की भूमिका निभाने की सोची। इसके अलावा, उनकी हार ने अंग्रेजी EIC को बंगाल और द. भारत में अपनी सत्ता मजबूत करने का मौका दिया। वहीं दूसरी ओर अफगानों को भी अपनी जीत से कोई विशेष फायदा नहीं हुआ। वे पंजाब को अपने अधिकार में नहीं रख सके।

विपिन चंद्र के अनुसार "पानीपत की तीसरी लड़ाई ने यह फैसला नहीं किया कि भारत पर कौन राज करेगा बल्कि यह तय कर दिया कि भारत पर कौन शासन नहीं करेगा।" इससे भारत में ब्रिटिश सत्ता के उदय का रास्ता साफ हो गया।